2

जिनवाणी जान सुजान रे...

जिनवाणी जान सुजान रे, जिनवाणी जान सुजान रे ।।
लाग रही चिर तें विभावता, ताको कर अवसान रे ।।
जिनवाणी जान.....

द्रव्य क्षेत्र अरु काल भाव की कथनी को पहिचान रे ।
जाहि पिछाने स्व पर भेद सब जाने परत निदान रे ।।
जिनवाणी जान.....

पूरव जिन जानी, तिनही ने भानी संसृति वान रे ।
अब जाने अरु जानेंगे जे ते पावें शिवथान रे ।।
जिनवाणी जान....

कह तुषमाष मुनी शिवभूति, पायो केवलज्ञान रे ।
यों लखि 'दौलत' सतत् करो भवि, जिन वचनामृत पान रे ।।
जिनवाणी जान....

हे सज्जन जीव, ज्ञानी जीव ! जिनवाणी को जानो। उसका अभ्यास करो तथा अनादिकाल से जो विभाव भागों में बुद्धिलगी हुई है उसका अंत करो ।

हे जीव ! जिनवाणी में आयी हुये द्रव्य-क्षेत्र-काल और भाव की कथनी को पहचानो क्योंकि इसके ज्ञान द्वारा ही अपने और पराये का समस्त भेद ज्ञात होता है।

पूर्व में जिन जीवों ने जिनवाणी को जाना अर्थात् जिनवाणी के उपदेश अनुसार श्रद्धान किया उनको ही आत्मज्ञान की प्राप्ति हुई और अब जो जीव जिनवाणी को जानकर तद्रूप आचरण करेंगे तो वे भी निश्चित ही मोक्षपद को प्राप्त करेंगे।

कविवर दौलतरामजी कहते हैं कि जैसे शिवभूति मुनिराज ने दाल और छिलके की भिन्नता के सदृश्य आत्मा और देह के भेद ज्ञान से भावभाषन करके केवल ज्ञान को प्राप्त कर लिया इसलिये हे प्रबुद्धजीवों जिन वचनों का निरन्तर रसपान करो जिससे तुम्हें भी आपार सुख अर्थात मोक्ष की प्राप्ति होगी ।